अध्याय- 2

भाषा का संकट और अस्तित्व संघष:

1. भाषा का महत्व-

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते ह और इसके लिए हम वाचिक ध्वनियों का उपयोग करते ह। भाषा मुख से उच्चारित होनेवाले शब्दों और वाक्यों आदि का वह समूह है. जिनके द्वारा मन की बात बतलाई जाती है। किसी भी देश की संस्कृति एवं साहित्य को संरक्षित करने की दृष्टि से भाषा का महत्व निविवाद है। "व्यक्ति का जीवन भी होती है। व्यक्ति की अस्मिता की पहचान भाषा से ही होती है। अपनी भाषा से कटते ही व्यक्ति अपनी संस्कृति और मूल्यवान परम्पराओं से भी कट जाता ह।"(1) सामान्यत: भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का सवाधिक् विश्वसनीय माध्यम है। हमारे आभ्यंतर के निमाण विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सवथा अपूण है और अपने इतिहास तथा परम्परा के विच्छिन्न है। भाषा का संबंध मात्र व्यक्ति से ही नहीं होता है, अपितु उसका संबंध पूरे राष्ट्र की संस्कृति एवं वाणी को बुलंद करने हेतु एक औजार के रूप म भी होता है। "भाषा स्वयं संस्कृति नहीं है, वह संस्कृति का वाहन मात्र है।" (2)

भाषा को कोई ईश्वरदत्त कहता है, कोई उसे मनुष्य कृत बतलाता है। मनुस्मृतिकार लिखते ह-

"सवषां तु सनामनि कमाणि च पृथक पृथक।

वेद शब्देभ्य एवा दौ पृथक संस्थाश्च निममे । (1) (2)

तपो वाचं रतिं चैव Ò ष्टुमिच्छिन्नमा प्रजा: (1) (25)

(ब्रह्मा ने भिन्न-भिन्न कर्मों और व्यवस्थाओं के साथ सारे नामों का निमाण सृष्टि के आदि म वेद शब्दों के आधार से किया। प्रजा उत्पन्न करने की इच्छा से परमात्मा ने तप, वाणी, रति, काम और क्रोध को उत्पन्न किया। (www.hindisamay.com/contentdetail)

प्रोफेसर पाट कहते ह-

"भाषा के वास्तविक स्वरूप म कभी किसी ने परिवतन नहीं किया, केवल बाह्य स्वरूप म कुछ परिवतन होते रहे ह, पर किसी भी पिछली जाति ने एक धातु भी नया नहीं बनाया, हम एक प्रकार से वही शब्द बोल रहे ह, जो सगारम्भ म मनुष्य के मुंह से निकले थे।" (3)

साहित्य, संस्कृति, दशन, इतिहास तथा कला को दीधकाल तक संरक्षित करने का काय भाषा ही करती है। वस्तुत: "भाषा आदमी को अंदरूनी ढंग से जोड़ती है। उसके बिना संस्कृति विकलांग और गूंगी हो जाती है। राजनीतिक शक्ति का स्रोत भी भाषा ही होती है।" (4)

भाषा को अपनी एक संवेदना होती है, इस संवेदना को मूत रूप देने के लिए शब्द अपनी सामथ्य का उत्सग करते है. हिंदी को एक भरी पूरी परंपरा म शब्द सामथ्य के इस अवदान का एक गौरवशाली इतिहास है.

भारतीय अप्रवासियों का पदापण जब मॉरीशस भूमि पर सन १८३४ से आरम्भ हआ तो वे अपनी भाषा, संस्कृति, भारतीय सभ्यता, धम एवं परंपरा साथ लेते आए थे. यदि मॉरीशस के आधुनिक परिप्रेक्ष्य म हिंदी को उज्जवल स्थिति को देख तो इसके पीछे इस भाषा का सतत संघष रहा है. आज मॉरीशस म हिंदी भाषा का स्थान विशेष एवं अग्रगण्य इसलिए है, क्योंकि इसके पुष्पित पल्लवित एवं फलित होने का एक बड़ा ऐतिहासिक कारण है.

➢ मॉरीशस के हिंदी भाषा का काल विभाजन:-

भारतीय अप्रवासियों के साथ ही मॉरीशस के हिंदी भाषा का इतिहास का संबंध जुडा हआ है। मॉरीशस म हिंदी के अस्तित्व और उसके विकास के लिए भारतीयों द्वारा किये गये निरंतर संघषों का इतिहास ही है। मॉरीशस को हिंदी भाषा का इतिहास काल विभाजन इस प्रकार है।

1. प्रारंभिक काल-पूव प्रारंभिक काल या भाषा-संरक्षण काल (1834 ई. से 1900 ई तक)

2. उत्तर प्रारंभिक काल या प्रेरणा काल (1935 ई. सं 1935 ई)

3. मध्यकाल या संघष-काल (1935 ई. से 1968 ई.)

4. आधुनिक काल या विकास-काल (1968 ई. से आज तक)

1. प्रारंभिक काल- पूव प्रारंभिक काल या भाषा-संरक्षण काल (1834 ई. से 1900 ई. तक)

मॉरीशस म अप्रवासी भारतीयों के लिए सन् 1834 से 1900 तक का काल, सवाधिक भाषा- संकट का काल, सवाधिक भाषा-संकट का काल रहा है। जो भी भारतीय मजदूर यहां आये, उनके सामने रोजी-रोटी को समस्या भी थी। सबसे बडी समस्या भाषा के प्रयोग और संपक को भाषा को थी। मॉरीशस म भारतीयों से भी पूव फ्रेंच-अंग्रेजी, चीनी और क्रियोली भाषाएं तो वहां पहले से ही विद्यमान थीं। ऐसे म उनके समक्ष विचार-विनिमय एवं पारस्परिक भावाभिव्यक्ति को प्रमुख कठिनाइयां आ गई। प्रारंभिक काल म भारतीयों ने वहां अनेक प्रकार को समस्याओं का सामना किया, यातनाय सही, संकट भी झेले लेकिन अपने धम, संस्कृति, सभ्यता से जुडे रहे।

अपनी भाषा का ख्याल उन्होंने हरदम रखा है। इस दृष्टि से प्रारंभिक काल को भाषा संरक्षण काल भी कहा जा सकता है।

- **भाषा- संकट एवं अस्तित्व के लिए संघष-**

"प्रारंभिक काल के तत्वकालीन भारतीयों के सम्मुख भाषा-संबंधी दो प्रमुख समस्याएं उत्पन्न हई-

1. आप्रवासी के से पूव मॉरीशस म रहनेवाले फ्रेंच अंग्रेजी, क्रियोली एवं चीनी बोलनेवालों के साथ उनके भाव-संप्रेषण का आधार-सूत्र किस भाषा म हो?

2. स्वयं भारत से आने वाले विभिन्न भाषा-भाषियों के मध्य पारस्परिक विचार-विमश का संपक-सूत्र किस भाषा म हो? "(5) मॉरीशस म मजदूरों को भाषा और मालिकों को भाषा ने समय के साथ एक नया माग अपनाया। जब श्रमिकों को खेतों म गुडाई-बुआई, सिंचाई, निराई, कटाई एवं ढुलाई के क्षणों म पग-पग पर, सरदारों एवं मालिकों को मारपीट, गाली-गलौज को भाषा समझम आने लगी थीं और समय के साथ ये कुली-मजदूर जंगली भाषा बोलने वालों को उपाधि पाकर भी, अपनी भाषा का प्रयोग करने म नहीं चुकते थे।

- **मॉरीशस म तत्कालीन भाषा-स्थिति-**

भाषा को दृष्टि से मॉरीशस म तत्कालीन समाज म दो वगों म विभाजित करके भाषा को स्थिति का अध्ययन कर सकते ह।

1. पाश्चात्य भाषाओं को स्थितियां

2. पूर्वी भाषाओं को स्थितियां

1. पाश्चात्य भाषाएं-

फ्रेंच भाषा-

मॉरीशस औपनिवेशक शासकों म सबसे महत्वपूण स्थान फ्रांसीसियों का रहा। शासन के साथ ही उनको सभ्यता, संस्कृति एवं भाषा को अमिट छाप भी मॉरीशस पर अधिक है। सन 1810 म अंग्रेजों को मॉरीशस का शासन सौंपते हए फ्रेंच शासकों ने फ्रेंच भाषा को सुरक्षित रखने को मांग भी रखी थी "मॉरीशस को सवप्रथम भाषा फ्रेंच ही है।"(6)

अंग्रेजी भाषा- सन1810 से आज तक यहां को राजभाषा अंग्रेजी है। फ्रांसीसियों को पराजय के बाद मॉरीशस पर अंग्रेजों का आधिपत्य हआ। अंग्रेजी का शिक्षा का माध्यम है।

20 वी सदी के प्रारंभ म विश्व ने मॉरीशस को इसी भाषा से पहचाना है। भारतवंशी सभी लेखकों ने इस भाषा म ही लेखन अधिक लिखा। नाटक, काव्य, उपन्यास निबंध, इतिहास आदि सभी विषयों पर बहत से लेखकों ने लिखा। अंग्रेजी म लिखी गई पहली कृत 'फजुजिखि एन्ड मिसले नियस वेसज' किसी अज्ञात लेखक है। सन1814 -1845 म बेकर एडबड का द सीजन नाम संग्रह निकला। इसके अतिरिक्त असगरअली, दीपचंद बिहारी, जयनारायण राय, के.हजारी सिंह, बासुदेव बिसुन, दो चल आदि बहत- सी अच्छी कृतियां सामने आई- मैन एन हाएडिंग, नेवर गुड बाय, मॉरीशस इन ट्रांजिशन दट्रुथ अबाउट मॉरीशस आदि दो दशक तक 100 से भी अधिक रचनाएं लिखी गई। अब भी पत्र-पत्रिकाओं, कामिक्स, उपन्यास और बाल साहित्य को दृष्टि से मॉरीशस को अंग्रेजी भाषा है। उच्चारण कान्वट शैली का प्रभाव भी है।

- **क्रियोली बोली-**

क्रियोली बोली को भाषा का दजा प्राप्त नहीं हआ है "क्रियोली का जन्म अफ्रिको दासों तथा फ्रेंच जमीदारों के बीच वातालाप के दौरान हआ।"(7)

2. पूर्वी भाषाएं और उनको स्थितियां-

पूर्वी भाषाओं म चीनी और अन्य भारतीय भाषाओं – भोजपुरी (हिन्दी), तमिल, तेलुगु, गुजराती, मराठी, बंगाली, पंजाबी, उदू, संस्कृत आदि का उल्लेख किया जाता है।

- **चीनी-**

चीनी भाषा बोलनेवालों को संख्या मॉरीशस म कम है। चीनी भाषा को प्रचारक संस्था कोई नहीं है। सांस्कृतिक उदेश्यों से चीनी यहां नहीं आए ह, न प्रभुत्व जमाना चाहते ह। ये तो व्यापारिक-काय करते ह। साहित्यिक ग्रंथ यहां को चीनी म नहीं है।

भारत से आनेवाले विभिन्न भाषा-भाषी लोगों म निम्नलिखित दो कारणों से

विचार-विमश एवं भाव-संप्रेषण के क्षणों म कोई कठिनाई नहीं आयी

1. लिपिगत एवं शब्दगत कतिपय साम्य
2. भावात्मक संबंधों म एकता

१. लिपिगत एवं शब्दगत साम्य एवं हिंदी-

भारतीय भाषाओं का आपस म आदान-प्रदान हआ है- "हिंदी, उदू आदि भारतीय भाषाएँ एक –दूसरे को पूरक है। एक आगे बढ़ती है, तो दूसरी भी आगे बढ़ती है। हिंदी-उदू म तो केवल लिपिभेद है। हिंदी और मराठी को लिपि एक है। तेलुगु संस्कृत प्रधान-भाषा है तथा तमिल-संरचना और चिंतन को दृष्टि से पृथक भाषा नहीं है।" (8)

२. भावात्मक संबंधों म एकता-

भाषाएं भावात्मक संबंध से आपस म सभी लोग प्रभावित करते ह। भारतीय भाषाओं के एकसूत्र म स्थापित होने के लिए हमारी भारतीय भाषाएं समान रूप से प्रभावित करती है। इन सबम कुछ बात सहायक रूप म सहाय करती ह।–

1. भारतीय संस्कृति
2. रामचरित मानस, रामायण, महाभारत आदश या प्रेरणा स्रोत के रूप म
3. संस्कृत से प्रभावित भाषा
4. वेदनाएं समान रही।

➢ **भोजपुरी:-**

सामाजिक-सांस्कृतिक, जीवन यापन के क्रम म पूर्वी एवं पाश्चात्य भाषाओं के बोलनेवालों के द्वारा भोजपुरी-हिंदी के शब्दों को प्रत्यक्ष प्रभावित किया है। भोजपुरी के शब्द खिचड़ी, चटनी का क्रियोलों द्वारा क्रमश: किचिरी, साचिनी के रूप म प्रयुक्त किया जाता है। 'धोबी' शब्द का चीनियों द्वारा दोषी प्रयोग करना भोजपुरी दालपुरी शब्द का तमिल म भी दालपुरी आदि भोजपुरी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं का प्रभाव साफ दृष्टिगत होता है।

संपक भाषा के रूप म भोजपुरी-

मॉरीशस म भारतीय अप्रवासी या कुली समाज का संपक एवं संबंध बहभाषी समाज से था. भारत के विभिन्न प्रांतों को भिन्न-भिन्न भाषाएं होते हए भी भोजपुरी के करीब रही।

मॉरीशस म झोंपडी, बस्ती, खेत, कारखाना, जेल सभी स्थानों म मजदूर ही थे. उन्होंने सुख-दु:ख गाली गलौज, काम-काज, धृणा-द्वेष, पव त्यौहार, हष-उल्लास और संपक को भाषा के रूप म ही अधिक विकसित हई।

मॉरीशस के शिक्षा क्षेत्र और हिंदी को स्थिति-शिक्षा के क्षेत्र के आधारित हिंदी को परिस्थितियां अगर देखी जाए तो उसे प्रारंभिक काल म शिक्षा के क्षेत्र म लाया गया।

➢ **सरकारी स्तर पर शिक्षा को व्यवस्था-**

मॉरीशस म भाषा और शिक्षा को व्यवस्था प्रारंभिक काल म "जहां तक शिक्षा का संबंध है, सभी शासकीय तथा चीनी-कोठियों के विधालय प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप म धमातरण के माध्यम थे। अतएव भारतीय इन विधालयों म अपने बच्चों को नहीं भेजते थे।"(9) लेकिन सत्ता को ओर से भी शिक्षा को कोई व्यवस्था नहीं थी। शिक्षा को दिशा म राज्यपाल इगिंसन ने –"मजदूरों से बच्चों को शिक्षा के लिए अनेक कदम उठाये। सन1852 म

उन्होंने कौंसिल ऑफ गवनमट म कहा कि अप्रवासी भारतीयों के बच्चों के लिए एक प्राइमरी स्कूल को स्थापना के लिए दो सौ पौंड देने के लिए सरकार अपना अनुदान दे। दुर्भाग्यवश यह प्रयोग असफल हो गया।" फिर भी मॉरीशस म गवनर ने शिक्षा के क्षेत्र म अपने प्रयास जारी रखे।

द्वीप के दक्षिणी भाग म 2 वनाक्यूलर स्कूल स्थापित किये गये ह और उनम सफलता नहीं मिली है, तो भी सन 1854 म इगिंसन ने प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी के साथ तमिल को शिक्षा का भी प्रावधान कराने का प्रयत्न किया सन 1857 से स्कूलों म फ्रेंच भाषा को अनिवाय कर दिया गया। इस फसले का ईस्ट इंडिया कंपनी के डायरेक्टरों ने विरोध भी किया उनका मत था कि- "भारतीय मजदूरों के बच्चों पर कोई ऐसी शिक्षा व्यवस्था नहीं लादी जा सकती, जिसम उनको मातृभाषा पढाने को व्यवस्था न हो शायद इसी विरोध का पारिणाम था कि ओडिनस लागू न हो सका तथा तत्कालीन सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने भारत से शिक्षक मांगने को व्यवस्था करने को संस्तुति को, जिसे स्थानीय इमीग्रेशन कमेटी ने ना मंजूर कर दिया।" (11)

ऑडिनस ना मंजूर कर दिया था फिर भी कई दशकों तक अलग-अलग समितियां बनती गई कभी सफल कभी असफल भी रही सन 1857 के बाद सन 1867 तक द्वीप म भारतीय स्कूलों को संख्या बढकर 41 जितनी हो गई। भाषाई दृष्टि से कुछ ऐतिहासिक समान घटना का उल्लेख कर सकते ह वह है- मॉरीशस म सन 1867 के श्रम-संविधान के दुरुप्रयोग के विरुद्ध,जमन म जन्मे डप्ले विट्ज महोदय जो अपने ससूर के दो सौ बीधे जमीन एवं कल कारखाने को देख-रेख जब शिक्षा को दृष्टि से मॉरीशस म कई बार अनेक घटनाएं और प्रसंग ऐसे देखे गये जिससे शिक्षा के लिए एक नया बल मिला। 19 वीं शताब्दी के उतराध म 1897 म सत्याथ प्रकाश को मुद्रित प्रति का, बंगाल के सिपाही श्री भोलानाथ तिवारी द्वारा लाया जाना भी एक ऐसी ही अद्भूत घटना मानी जा सकती है। भले ही 'सत्याथ प्रकाश' ग्रंथ का सीधा प्रभाव नहीं आया हो आय समाज का प्रश्रय प्राप्त करके परोक्ष रूप से हिंदी को गतिशीलता को नया वेग देने के लिए प्रभावित किया। भाषा को दृष्टि से यह छोटा-सा परोक्ष प्रभाव भी एक नई दिशा प्रदान करता हआ दृष्टिगत होता है।

➢ 2. मंदिरो म, बैठक म प्रारंभिक शिक्षा-

यदि मॉरीशस के इतिहास को ओर नज़र दौडाएं तो चार सौ वर्षीय यह इतिहास अपने आप म अत्यंत विस्तृत, विराट परंतु रचनात्मक है. इसी विराटता एवं रचनात्मकता के धरातल पर हिंदी भाषा के प्रचार –प्रसार म उसे एक मंच मिला. हमारे भारतीय पूवजों ने उसी मंच को बैठका नाम से अभिहित किया. "बैठका" को व्युत्पत्ति 'बैठना'शब्द से हई. "बैठका" के शाब्दिक अथ म एक सांस्कृतिक वैभव है. "बैठका" से इतिहास जुड़ा हआ है. मॉरिशसीय हिंदू समाज म यह शब्द न केवल सव केवल सव प्रचलित है . अपितु यह सांस्कृतिक जीवन से जुड़ा हआ है. जिस जगह पर भारतीय मजदूर बैठते थे थे उसी स्थान को हम "बैठका" कहते ह. सदा से प्रवासी भारतीयों का एक सर्वोदय स्रोत रहा है. पूवज बिहार प्रान्त से आए हए थे तो वे अपने साथ उस व्यवस्था को भी लाए .

मॉरीशस म सरकारी स्तरों पर शिक्षा को देखे तो भारतीयों के लिए हताशा जनक ही रही, फिर भी भारतीय लोगों म संस्कृति भाषा तथा धम के मोह से कवच कुंडल को तरह चिपके रहे, जिसको वजह से उन्होंने मंदिरों म या

कहाँ रात के समय बैठका म सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय परम्परा या धम से जुडी बार्ता को उन्होंने जीवित रखा. अपने-अपने मालिकों के त्रास से त्रस्त भारतीय लोग बैठको के दौरान एक नई अनुभूति का अहसास कर रहे थे। अपने दु:खों को भूलाने, एक-दूसरे से दु:ख दद बांटकर, विचार को विमश कर के उन्होंने अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखा। रात्रिकाल म पढे लिखे लोग बच्चों को अक्षरज्ञान दिया करते थे। उनके पास कोई विशेष शिक्षा के लिए ग्रंथ (syllabus) नहीं था जो था वह हस्तलिखित ग्रंथ मॉरीशस इतिहास को साक्षी बने हए है। धामिक शिक्षा का कद्र होने को वजह से इन बैठकाओं को 'मठिया'भी कहा जाता था. वैसे देखा जाय तो इन बैठकाओं का आविभाव २० वीं सदी के उस आरंभिक चरण म हआ जब भारतीय आप्रवासी यों को यह लगा कि शिक्षा के लिए अलग से कोई कमरा होना नितांत आवश्यक है. जो हर समय हिंदी शिक्षण या बटोर के लिए खुला रहे . हर शाम घर के बहार बैठने का भी मानो सामाजिक कतव्य बन गया था. अनेक कहानियां सुनते थे .

मंदिरों म भी बैठको को भांति स्वैच्छा से शिक्षा दी जाती थी हम यह भी कह सकते ह कि धम ने मॉरीशस को भारतीय भाषाएं भी दी सन1859 म मंदिरों का निमाण जिसका व्यवस्थित रूप से प्रारंभ हो गया था। भजन-कीतन के साथ-साथ शिक्षा का दौर भी चलता था। शिक्षा ही एक माध्यम था जिससे वह नई दिशा म आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकते थे।

प्रारंभिक म बारहखड़ी पढ़ाई जाती थी. धीरे धीरे शब्दों को जानकारी हई तो रामायण का पाठ करने लगे. गणित हो या पहाडा सब हिंदी म सिखा. एक ओर मंदिर व बैठका से शिक्षा को शुरुआत तो दूसरी ओर देख सकते ह कि भाषा-संस्कृति और धम के नाम पर चाहे बैठका हों या मंदिर दोनों म ही शिक्षा देने के लिए शिक्षा पद्धति व्यवस्थित या वैज्ञानिक नहीं थी लेकिन शिक्षा एक गति से आगे बढ़ रही थी शिखाने का ढ़ंग बिलकुल अलग था.

"पहिल-क, दूसर-ख, चंदा-ग, गुनिया-घ, छता-छ, जनेवा-ज, कुरपीछा-द, पनवा-प, तीनकोनिया- य आदि। मात्रा का ज्ञान इस प्रकार कराया जाता था -क- कानून, का- हिरसिन, कि-दिरधिन, की-तारकुन, कु- बारजून, कू-एकले, के- डोले, कै- करमत, को-दिरबिच, कौ-कन्ना, मास्ते-कं, दुरबासी-क: इस शिक्षण- पद्धति म भोजपुरी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है" (14) जैसे कि मंदिरों व बैठका म शिक्षा का प्रारंभिक विकास के कारण गुरु महिमा या देवी देवता की पूजन पद्धति के महत्व को देखा जा सकता है।

" सर-सर, सर-सर, संझकारि/ सोने रूपे गिरिवर धारी

जो जाने गिरिवर के भेव\ नित उठ पूजे गनपत देव

* * *

पहले फूल विनायक दिजे/दोसर का सरोसती दिजे

तीसरे का महादेव/ चौथे गुरु पांव पंरहे

* * *

गुरु पांव पावे आसीस/ गुरु हारे बरसे चांदी

आखरमोदि/ विधा के फल बैठल खाय।" (15)

मॉरीशस को भाषा का अध्ययन करने पर पता चलता है कि भोजपुरी भाषा के प्रभाव को अधिकांश देखा गया है, उसको शब्दावली का अधिक प्रयोग हआ है। भाषाई दृष्टि से मॉरीशस को हिन्दी और भारतीय भाषाएं एक दूसरे को प्रभावित करती हई विकसित हो रही थी। धामिक एवं सांस्कृतिक वजह से भाषा का एक नया रूप मिला जो शिक्षा का माध्यम रहा वहां जे भारतीयों का और वहां के भारतीयों का और वहां के जीवन को शिक्षा से नई दिशा भी मिली।

- **धामिक ग्रंथों और हिंदी भाषा:-**

भारतीयों के आधार व प्राण समान हमारी धामिक पुस्तक थी, जो उन्ह भारतीय परम्परा और संस्कृति से जोड़कर रखती थी। रामचरितमानस उनका प्राणवायु था। रामचरित मानस के साथ-साथ हनुमान चालीसा, आल्हा खंड, गायत्री मंत्र, सत्यनारायण कथा, महाभारत कथा, श्रीमद भागवत कथा, कजरी, बिरहा आदि से संबंधित अनेक कथाएं उनको साहस और प्रेरणा देती थी कथा सुनने और सुनाने को परम्परा म भाषा का संरक्षण भी हो गया था. जिससे एक सूत्र म बंधने के लिए भाषा एक सहारा बनी थी. आज भी हम अपने विचारों को भाषा के जरिए ही रखते ह।

- **प्रारंभिक हिंदी का स्वरूप एवं साहित्य-**

मॉरीशस म जब हिंदी भाषा के विकास को चचा करते ह, तो हिंदी से भी पूव भोजपुरी भाषा को यात्रा दृष्टिगत होती है। पूर्वी भारत से मजदूरों के रूप म लाये गये भारतीयों को भाषा म भोजपुरी, बिहारी, विशेष थी व्यवहार म भोजपुरी का ही वचस्व था उस वक्त साहित्यिक रचनाओं को नहिंवत माना जा सकता है क्योंकि कोई विशेष साहित्यिक ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता है। भोजपुरी भी कैथी लिपि म प्रयुक्त होती थी। लोक साहित्य लोकभावों का वह माध्यम रही थी।

भोजपुरी लोकसाहित्य और संकलन से प्रारंभ होता है। लोगों ने अपने दु:ख दद को लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया है, जीवन संस्कारों, विभिन्न परिस्थितियों को, संत्रासों को अपनी लोकबोली म अभिव्यक्त करते थे।

"अंगाजे रहल भइया/ अंगाजे रहल भइया हो

एके महीनवा म पांच गो रुपइया/ अंगाजे रहल भइया हो"

प्रस्तुत गीत क्रियोली भाषा का प्रभाव स्वाभाविक रूप से ही हआ है। उस समय अंगाजे (शतबंदी) क्रियोली बोली म प्रयुक्त होता था। निश्चय ही इस शब्द का प्रचलन भोजपुरी- समाज म रहा होगा, जिसे लोकगीत म पिरो लिया गया है। उस समय के गायकों के गीतों म लयात्मक एवं संगीतात्मक भावमय स्वरों को भाषिक छटा भी कम मोहल एवं प्रेरक नहीं है। इस लोकगीत म इतिहास का दद भी झांक रहा है। उक्त गीत म भोजपुरी- भाषा के संपूण सुरक्षित स्वरूप को लिए हए एको महिनवा म पांच गो रूपइया" (16) हिन्दी तथा भोजपुरी भाषाओं म मॉरीशस के इतिहास के दद को बयां करते हए गीत अधिक मात्रा म मिलते ह।

- **उत्तर प्रारंभिक काल या प्रेरणा काल (1900-1935 तक)**

पूव प्रारंभिक काल के उतराध के अंतिम दशक के अंत म सत्याथ प्रकाश को मुद्रित प्रति का आगमन खड़ीबोली के आगमन को दृष्टि से महत्वपूण है। 20 वी शताब्दी के पूवाद्ध के साढ़े तीन दशक (1900 से 1935) ई तक के काल खंड को भाषा के इतिहास का काल मान सकते ह या उसे उत्तर प्रारंभिककाल या प्रेरणा काल कहना अधिक समीचीन होगा। महात्मा गांधी के आगमन एवं भारतीयों को शिक्षा और राजनीति म भाग लेने के लिए प्रेरित करना, "सत्याथ प्रकाश" द्वारा खड़ी बोली को ओर बढ़ने को प्रेरणा, मणिलाल डॉक्टर द्वारा साहसपूवक खड़े होने को प्रेरणा, "हिंदुस्तानी" पत्रिका से जन-जीवन को प्रेरित करना, आय समाज को सामाजिक सुधार-उद्धार को प्रेरणा, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से संगठन अहिंदी भाषी जनों द्वारा हिंदी प्रचार-प्रसार एवं शिक्षण प्रेरणा, विभिन्न डॉक्टर, वकील, सन्यासी, पत्रकारों को प्रेरणा, सभाओं एवं विधालयों द्वारा हिंदी साहित्यकारों द्वारा गद्य-पद्य लेखन को प्रेरणा इस तरह अनेक प्रेरणा मूलक घटनाएं और प्रसंग है। इसी काल म भारतीय संतों, विद्वानों, चिंतकों, राजनीतिज्ञों, संन्यासी, वकील, डॉक्टरों, पत्रकारों इन सभी को हिंदी भाषा के आधार पर समाज सुधार को दृष्टि से काय हए। भाषा के आधार पर ही समाज को नयी नींव भी रखी गई थी। सन1900 से 1935 के कालखंड को सही अथ म प्रेरणाकाल कहना साथक और समुचित होगा। इसी काल से भाषा का इतिहास गतिमान होता हआ दृष्टिगत होता है।

गांधीजी का आगमन-

गांधीजी का आगमन-

20 वी शताब्दी पहले ही वष सन1901 ई. म अप्रवासी भारतीयों के लिए वरदान-सिद्ध हआ। इसी वष गांधीजी दक्षिण अफ्रिका से लौटकर आते ह, गांधीजी उस समय 18 दिनों (29 अक्टूबर, 1901 से 15 नवम्बर 1901 तक) के लिए मॉरीशस प्रवास पर जो जीवन था वह निराशा की खाई म डूबा हआ या उसे एक आशा की नई किरन दिखलाई, लोगों म संघष करने और सामना करने का बल मिला राजनीति म अपना योगदान द और सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त हो सके ऐसा इंतजाम करवा सके। गांधीजी ने भारतीयों के दद को हौसला देकर नई दिशा देकर हर व्यक्ति की रग-रग म चेतना का संचार किया। मॉरीशस म भारतीयों को अपनी भाषा प्रयोग को लेकर उन्ह मानसिक त्रास दिये जा रहे थे कभी भारतीयों की भाषाओं को (जंगलियों की भाषा) कहकर मजाक भी बनाया गया। जिस वक्त गांधीजी ने वहां हिंदी भाषा म संबोधित देते हए अपना वक्तव्य दिया तो वहां निवासी लोगों को भी मान-सम्मान और गौरव का बोध प्राप्त हआ। गुजरात के महानायक गांधीजी गुजराती, अंग्रेजी सभी भाषाओं म तेज-तरार बोलते थे लेकिन उन्होंने खडीबोली हिंदी (हिंदुस्तानी-उदू-हिंदी-मिश्रित) भाषा म अपने अमूल्य एवं अनमोल विचारों को व्यक्त किया। इसके बाद परिवतन का दौर प्रारंभ होता है भारतीयों के स्वाभिमान, साहस एवं नई उजा का प्रवाह उमडने लगा। धीरे-धीरे भोजपुरी के प्रवाह को हिंदी की ओर मुडते देखा जा सकता है।

"सत्याथ प्रकाश" खडी बोली हिंदी के भाषा प्रवाह का नव वाहक बना भाषा के पूव प्रारम्भिक काल म इसकी चचा हो चुकी है। 1897 ई म आया। यह ग्रंथ खडी बोली हिंदी एवं देवनागरी लिपि म था। सन1902 म लौटते समय श्री भोलानाथ तिवारी ने यह ग्रंथ श्री भिखारी सिन्ह या श्री रामप्रसाद ओझा को दे दिया, जो सन 1903 म श्री खेमलाला को बाद म प्राप्त हआ।" (17) दयानंद सरस्वती जी के सत्याथ प्रकाश ग्रंथ की खडी बोली म था जब कि उसकी लिपि देवनागरी थी।

मणिलाल मगनलाल डॉक्टर का मॉरीशस मे आगमन और हिंदी भाषा के योगदान:-

मणिलाल मगनलाल शाह मूल गुजराती भाषा के गुजरात के निवासी, 29 जुलाई,1881 बड़ौदा के गुजराती परिवार म जन्मे व्यवसाय से वकालत कर रहे थे। गांधीजी की प्रेरणा से 11 अक्टूबर,1907 म मणिलाल डॉक्टर मॉरीशस

पहंचे स्वभाव से ही वे कमठ थे। उन्होंने गांधी के माग पर चलते हए मॉरीशस के लोगों का सही मागदशन किया। कमठ के साथ-साथ उनकी चारित्रिक द्रढ़ता लगन और तपोनिष्ठ व्यक्ति थे। इसके साथ-साथ गुजराती अंग्रेजी के अलावा मराठी और हिंदी भाषा के विद्वान ज्ञाता थे। हिंदुस्तानी सन 1909 पत्रिका का प्रकाशन कर के उन्हों ने सत्ता से संघष के लिए नया माग चुना और सफल भी हए। इस पत्रिका म भाषा का महत्व, समाज की गरिमा, समस्याओं पर प्रकाश डालना मॉरीशस म मणिलाल डॉक्टर के प्रयास से आय समाज तथा यंगमस-हिंदू-एसोसिएशन की स्थापना भी मणिलाल डॉक्टर यह चार साल तक रुके 23 सितम्बर,1911 को लौट आए।

20 वी शताब्दी म आय समाज के विकास साथ धम प्रचारक, वकील, पत्रकार आदि जितने भी लोग मॉरीशस आये उन्होंने हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार किया।

- **<u>हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए-</u>**

  सन 1911 म डॉ. भारद्वाज दंपती ने मॉरीशस म हिंदी भाषा के प्रति अपनी सेवाएं समपित की। हिंदी शिक्षा के माध्यम से मातृभाषा का महत्व और स्त्री शिक्षा पर भारद्वाज की पत्नी के व्याख्यान हए पहले बहत विरोध भी हआ। लेकिन स्त्री, शिक्षा, भाषा, धम के नाम भी वहां हिंदी भाषा का प्रचार हआ। पं. आत्माराम विश्वनाथ, महाराष्ट्र से 1912 म मॉरीशस आये। वे मराठी हिंदी, अंग्रेजी और गुजराती भाषा के ज्ञाता थे। हिंदुस्तानी के बाद मॉरीशस आयपत्रिका, आयवीर, जागृति, आर्यादय आदि पत्रिकाओं के संपादन करते रहे। पं.आत्माराम एक प्रसिद्ध हिंदी लेखक थे। मॉरीशस का इतिहास, हिंदू मॉरीशस, मॉरीशस म ईश्वर बालपुस्तक माला, छत्रपति शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई, आदि अनेक पुस्तक प्रकाशित हई। पं.आत्माराम को मॉरीशस के प्रथम हिंदी लेखक होने का गौरव प्राप्त है। स्वामी स्वतंत्रतानंद, पं.काशीनाथ किश्तो, पं रामअवध शमा, कुंवर महाराज सिंह आदि।

" सन 1925 म राज्यपाल सर हरबट रीड के.सी.एम.जी. ने आय परोपकारिणी - सभा द्वारा मॉरीशस की पाठशालाओं म हिंदी -आध्यापकों द्वारा हिंदी की पढ़ाई को स्वीकार कर लिया। देश की कुछ पाठशालाओं म हिंदी की पढ़ाई शुरु हो गयी" (18)

मॉरीशस म मजदूरी के बाद थके हारे लोगों ने शाम के वक्त नाच-गाना मनोरंजन का जरिया बनाया तो त्यौहार या पव के दौरान नृत्य-नायिका के आयोजन होते रहे थे। इन पर्वों के गीतों की भाषा भोजपुरी और हिंदी म हआ करती थी। रासलीला, रामलीला जैसे नाटक भी किये जाते थे। नाटक वाक्-चलचित्रों म भी हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का प्रयोग होता था। सन् 1933 म हिंदी फिल्मों का प्रदशन शुरु हआ मनोरंजन के साथ भाषा का भी प्रचार-प्रसार हो रहा था।

- **<u>प्रारंभिक हिंदी साहित्य और भाषा का महत्व-</u>**

20 वी शताब्दी से पूव प्रारंभिक काल को भोजपुरी भाषा ही स्थान था। उसके बाद खड़ीबोली का प्रचार-प्रसार हआ। सन 1913 म हिंदुस्तानी पत्रिका म 'होली' कविता और 'सत्यहोली' प्रथम गद्य-पद्य उपलब्ध साहित्य माना जा सकता है। " होली कविता म खड़ी बोली का स्वरूप दृष्टिगत होता है, लेकिन भोजपुरी, ब्रज, अवधि के विभिन्न शब्दों का प्रयोग हआ है। गद्य लेखन म पं. आत्माराम विश्वनाथ ने अपना विशेष योगदान दिया। उन्होंने 'मॉरीशस का इतिहास (1923) इतिहास का प्रथम ग्रंथ लिखा जिससे साहित्य जगत म नई राह मिल जाती है। उनकी पुस्तकों म मॉरीशस म भगवान, छत्रपति शिवाजी, लक्ष्मीबाई, हिंदू मॉरीशस आदि।

भाषा की दृष्टि से उत्तर प्रारंभिक काल कि भाषा भोजपुरी और खड़ीबोली का विकास हआ। आय समाज, सनातन धम ने अपने धम के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग किया। इसके साथ-साथ भाषा शिक्षण के लिए, सभा-संस्थाओं, पत्र-पत्रिकाओं के लेख, कहानी, कविता, पाठ्य-पुस्तक- लेखन आदि से भी हिंदी का विकास अग्रसर होता गया। सामाजिक, राजनीतिक, दृष्टि से भी हिंदी की गतिशीलता निरंतर आगे कदम बढ़ाने लगी थी।

मध्यकाल या संघषकाल (1935 ई. से 1968 ई. तक) मॉरीशस मे 1935 से 1968 ई तक धामिक सामाजिक तथा राजनीतिक और भाविक संघर्षों से एक अध्याय सामने आया. भाषा के लिए भी संघष काल के रूप म देखा जा सकता है। 1834 से अप्रवासियों की यात्राएं (1834 ई से 1934 ई. तक)अपने अस्तित्व को टिकाये रखने के लिए उन भारतीयों को भाषा की एकता के बल से ही सामूहिक एकता स्थापित करनी पड़ी थी। हिंदी भाषा की ज्योत मॉरीशस के हर कोने म जगाई और भाषा को सूत्र बनाया। मानव से मानव को जोड़ने का इस प्रकार भाषा संपक की भाषा और मानव समाज की भाषा बन कर अपना योगदान देती रही।

मध्यकाल म समय के साथ-साथ नई विकास की गति को देखा जा सकता है। डॉ. शिवसागर, राम गुलामजी ने राजनीतिक, सामाजिक, पं. वासुदेव विष्णुदयाल ने भी सामाजिक सांस्कृतिक संगठन श्री नेमनारायण, श्री निवास जगदत्त, श्री जयनारायण राय तथा भगत बंधुओं आदि ने साहित्यिक सामाजिक संगठन एवं हिंदी लेखन का प्रचार-प्रसार किया।

<u>हिंदी प्रचारिणि सभा-</u>

मॉरीशस म हिंदी भाषा के विकास म हिंदी प्रचारिणी सभा का बड़ा योगदान माना जा सकता है। हिंदी अनुरागी मनीषियों ने मोताई लोंग ग्राम के तिलक विधालय (1926) को ही हिंदी- प्रचारिणी सभा के नाम से सन 1935 ई. म पंजीकृत कराया। 1946 से नामकरण बदल के हिंदी भवन कर दिया गया। इसी समय 'दुगा' हस्तलिखित पत्रिका भी प्रकाशित हई। हिंदी प्रचारिणी सभा के माध्यम से 1935 म सभा द्वारा व्यवस्थित ढंग से पढाई के लिए विधा-समिति की रचना हई। जिससे हिंदी अध्यापन काय को सुचारु रुप से संपादित करने हेतु निरीक्षण कर सके ऐसी व्यवस्था भी की गई। प्रतियोगिता और हिंदी की प्रारंभिक परीक्षाएं भी आयोजित की जाने लगी।

- **आयसमाज-**

जिस प्रकार हिंदी प्रचारिणी सभाने हिंदी के लिए आरंभिक प्रयास किए. उसी तरह आय समाज ने भी हिंदी भाषा तथा साहित्य के लिए अखिल भारतीय वैदिक धम की परीक्षाओं जैसे कि सिद्धांत रत्न, सिद्धांत भूषण, सिद्धांत शास्त्री, वेद वाचस्पति आदि स्पधात्मक परीक्षाओं को बढ़ावा दिया गया। इन सभी परीक्षाओं का माध्यम हिंदी भाषा ही रही। सन 1954 से आय प्रतिनिधि सभाने विधा-विनोद, विधा-रत्न, विधा-विशारद, विधा-वाचस्पति आदि परीक्षाएं भारत म अजमेर स्थित संस्थान से संबंधित स्थापित करके आरंभ की थी।

➢ हिंदी विद्वानों का योगदान-

हिंदी के कुछ विद्वानों ने अपना व्यक्तित्व, कृतित्व से हिंदी भाषा के लिए जो योगदान दिया वो कम नहीं है कभी-कभी संस्थाएं नहीं कर पाई वह काय अकेले व्यक्ति ने हिंदी भाषा के लिए किया है। इन सब म महत्वपूण विद्वानों म पं. उमाशंकर गिरजानन, पं. श्रीनिवास जगदत्त, श्री नेमनारायण 'गुरुजी', श्री जयनारायण राय, श्री मोहनलाल मोहित आदि महत्वपूण विद्धवान है, जिन्होंने मॉरीशस म हिंदी प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया था।

'सरकार से हिंदी के लिए लड़नेवालों मे हिंदी-शिक्षकों को सुविधा दिलानेवालों म, स्वतंत्रता के लिए हिंदी के महत्व को समझने वालों म तथा हिंदी के हाथ मजबूत करने के लिए हिंदी के अन्य बहनों को आगे बढ़ाने वालों म डॉ. शिवसागर रामगुलाम प्रमुख ह।"(19) शिवसागरजी ने नारा दिया कि "अपनी भाषा जरूर पढों का नारा दिया."

डॉ. शिवसागर रामगुलाम ने अपने शब्दों म कहा- "इस द्वीप के भारतवंशीयों को अपनी भाषा से बहत ही लगाव ह। भले ही हम सारी उम्र दूसरी भाषाओं को सीखने तथा दूसरी संस्कृतियों को अपनाने म लगा दे, परंतु जब तक हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को पूरी तरह और उपयोगी क्यों न हो, परंतु जब तक हम अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को पूरी तरह समझ सकते अन्य भाषाओं का अध्ययन कितना पूण और उपयोगी क्यों न हो, परंतु चाँरि हम अपने अस्तित्व को बनाये रखना चाहते ह और अपने लोगों को प्रसन्नता और कल्याण म योगदान देना चाहते ह, तो हम अपने हृदय म अन्य भाषाओं के अध्ययन को गौण स्थान देना होगा। इस द्वीप के भारतीयों को उनकी भाषा सिखानी ही चाहिए। वह भी उत्तम और शक्ति शाली ढंग से, क्योंकि तभी वे अपनी संस्कृति की रक्षा कर सकते ह और अब वे भविष्य म अपनी अस्मिता खोने के लिए बिलकुल तैयार नहीं ह।" (20)

➢ रेडियो, दूरदशन का योगदान-

मध्यकाल से ही जनसंचार के सभी माध्यम हिंदी के विकास म जुड़े रहे। 1939 म जो-बिलेट महोदय के व्यक्तिगत प्रयास से मॉरीशस म रेडियो सुना गया. जब कि 1964 म मॉरीशस म दूरदशन का आगमन हआ। इन जनसंचार माध्यम से हिंदी के विविध कायक्रम प्रसारित होने लगे।

मध्यकालीन युग: मॉरीशस म हिंदी भाषा का स्वण युग मॉरीशस म पत्र-पत्रिकाओं म गीत, लेख, भजन, साहित्यिक, राजनीतिक संदर्भों को हिंदी भाषा के माध्यम से आगे बढ़ा श्री सूयप्रसाद मंगर भगत, मुनीश्वर लाल चिंतामणि, अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, श्री जयनारायण राय, श्री सोमदत्त बखौरी, पं. वासुदेव विष्णुदयाल, आदि अनेक साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को पारिमाजित किया।

मॉरीशस म भाषा की दृष्टि से मध्यकाल हिंदी भाषा का स्वणयुग है। इसी काल म हिंदी के प्रचार-प्रसार, परीक्षा-परीक्षण, प्रशिक्षण-निरीक्षण आदि पर विशेष ध्यान दिया गया. हिंदी प्रचारिणी सभा हिंदी लेखक संघ तथा हिंदी पारिषद आदि की स्थापना भी इसी युग म हई।

➢ आधुनिक युग म हिंदी को स्थिति (1968 से)

आधुनिक काल का प्रारंभ सन1968 से होता है। "दोहरे मानदंडो, कथनी-करनी के अंतर तथा आम आदमियों के असंतोषजन्य परिवतन के साथ लेखकों को मानसिकता म निरंतर परिवतन होता रहा। उनके परिवतन का प्रखर संप्रेषणीय रूप साहित्य बना और साहित्य का प्रखर माध्यम हिंदी भाषा बनी" (21)

आधुनिककाल म हिंदी का प्रभाव थोड़ा कम होता हआ दृष्टिगत होता है। संरक्षणकाल, प्रेरणा काल या संघष काल म रहा। आज परिस्थितियां बदली है। नव साम्राज्यवादी सांस्कृतिक ताकतों ने इसके अस्तित्व को मिटाने के लिए नया तरीका ढूंढ लिया है। इसलिए वतमान काल म हिंदी भाषा के अस्तित्व अस्मिता एवं प्रतिष्ठा के लिए संघष करना पड रहा है। हिंदी लेखकों एवं हिंदी प्रचारकों को संघष करना पड रहा है।

➢ स्वातंत्र्योतर काल म हिंदी

श्री सोमदत्त बखौरी को पुस्तक 'हिंदी इन मॉरीशस " (1967) हिंदी-भाषा के इतिहास और हिंदी भाषा को समस्या को प्रथम पुस्तक है। श्री जयनारायण राय को पुस्तक 'मॉरीशस म हिंदी-भाषा का संक्षिप्त इतिहास (1970) जो दिल्ली से प्रकाशित का ज्ञात होता है। श्री जयनारायण राय ने क्रियोली के बढ़ते प्रभाव को चिंता व्यक्त करते हए कहते ह। "यदी हमारे घरों से भोजपुरी चली गयी, तो मॉरीशस म हिंदी भाषा को क्या स्थिति होगी? मॉरीशस के हिंदूओं के मुंह म भोजपुरी बनी रही, तो यहां हमारा धम, हमारी संस्कृति, हमारी भाषा और हमारी परम्पराएं सभी सुरक्षित रहेगी।" (22)

मॉरीशस म 1970 म भारत सरकार के आथिक सहयोग से महात्मा गांधी संस्थान को स्थापना हई पाठ्यपुस्तकों के निमाण, लेखन एवं प्रकाशन-विभाग, हिंदी भाषा विभाग, पठन-पाठन एवं प्रशिक्षण को सुविधा के साथ ही प्रौढ-शिक्षा, कला-संगीत, भोजपुरी-भाषा के संरक्षण एवं शोध-हेतु पृथक विभागों को स्थापना थी हई है। धीरे-धीरे हिंदी भाषा को स्थिति का विकास हो रहा है।

➢ विश्व हिंदी संमेलन-

हिंदी भाषा के विकास के हेतु विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन होता रहा है. हिंदी भाषा के सबसे बड़े सम्मेलन के रूप म स्वीकृति विश्व हिंदी सम्मेलन प्रारंभ से ही हिंदी को अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करता रहा है.

१.प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन –

(१०-१४ जनवरी, नागपुर भारत)

प्रमुख मंतव्यों –

संयुक्त राष्ट्र संघ म हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप म स्थान दिया जाए.

२.वधा म विश्व हिंदी विद्यापीठ का स्थापना हो.

३.विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए.

२. द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन-

(२८-३० अगस्त मोका, मॉरीशस)

१. मॉरीशस म एक विश्व हिंदी कद्र का स्थापना का जाए, जो सारे विश्व म हिंदी का गतिविधियों का समन्वय कर सके .
२. एक अंतराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निमाण कर सके जिसम मानव विश्व का नागरिक बना रहे और विज्ञान तथा अध्यात्म का महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके .
३. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ म एक आधिकारिक भाषा के रूप म स्थान मिले .इस उद्देश्य का प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कायक्रम बनाया जाए.

(३) तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन –
(२८-३० अक्टूबर, नई दिल्ली, भारत)

१.अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप म हिंदी प्रचार –प्रसार का संभावनाओं का पता लगाकर इसके लिए गहन प्रयास किए जाए.

२. हिंदी के विश्व व्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित करने का योजना का मूत रूप दिया जाए.

३.विगत दो सम्मेलनों म पारित संकल्पों का संपुष्टि करते हए यह निणय लिया गया कि अंतराष्ट्रीय भाषा के रूप म हिंदी के विकास और उन्नयन के लिए अंतराष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए. इस समिति म देश विदेश के लगभग २५ व्यक्ति सदस्य हों.

(४) चतुथ विश्व हिंदी सम्मेलन – (२-४ दिसंबर,१९९३, मॉरीशस)-

१.विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस म स्थापित किया जाए.

२.भारत म अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए.

३.विभिन्न विश्वविद्यालयों म हिंदी पीठ खोले जाएं .

४.भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित हिंदी के दैनिक समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तक प्रकाशित करने म सक्रिय सहायता कर.

५. हिंदी को विश्व मंच पर उचित स्थान दिलाने म शासन और जन समुदाय विशेष प्रयत्न कर .

६.विश्व के समस्त हिंदी प्रेमी अपने निजी एवं सावजनिक कार्यों म हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग कर और यह संकल्प ल कि वे कम से कम अपने हस्ताक्षरों, निमंत्रण –पत्रों, निजी पत्रों और नाम पट्टों म हिंदी का प्रयोग करगे.

७.सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र म हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समथन प्राप्त करने का साथक प्रयास कर.

विश्व हिंदी सम्मेलन का पहला सपना जय नारायण ने देखा 1937 म इस देश म हिंदी आंदोलन से जुड़े श्री जय नारायण राय ने विश्व हिंदी सम्मेलन जैसे आयोजन का सपना देखा था.(पृष्ठ नंबर 3 इंद्रधनुष 1996) हिंदी प्रचारिणी सभा ने जय नारायण राय की देखरेख म मॉरीशस म हिंदी दिवस हिंदी सप्ताह और प्रेमचंद सप्ताह जैसे समारोहों का आयोजन किया(पृष्ठ नंबर-36 पंकज पत्रिका) अगस्त 2009)

विश्व हिंदी सम्मेलन की यह यात्रा 1975 म भारत से शुरू हई. इसके आयोजन का विचार राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वधा द्वारा सन 1973 म प्रस्तुत किया गया. 10 से 14 जनवरी 975 को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्वाधान म भारत सरकार के सहयोग से पहला विश्व हिंदी सम्मेलन नागपुर म आयोजित किया गया. इस सम्मेलन का बोध वाक्य वसुदेव कुटुंबकम था जिसका अथ था हिंदी द्वारा एक विश्व एक मानव की भावना का विकास हो पहले विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन द्वारा यह भी तय हआ कि हिंदी और साधारण सामथ्य संपन्न भाषा है और वह संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र म बांधने के गौरव की अधिकारी है.

(५) पांचवां विश्व हिंदी सम्मेलन- (त्रिनिडाड4 से 8 अप्रैल, 1996)

त्रिनिडाड म हआ त्रिनिदाद एवं टोबैगो की राजधानी पोट ऑफ स्पेन 4 से 8 अप्रैल 1996 को आयोजित किया गया था. सम्मेलन का आयोजन हिंदी निधि संस्था द्वारा वेस्टइंडीज विश्वविद्यालय के सहयोग से किया गया हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम थी. भारत के प्रतिनिधि को तैयार करने का जिम्मा माता प्रसाद ने किया था. इस सम्मेलन का मुख्य विषय था अप्रवासी भारतीय और संस्कृति इसके अतिरिक्त हिंदी भाषा और साहित्य का विकास अरेबियन हिंदुओं म हिंदी की स्थिति कंप्यूटर युग म हिंदी की उपादेयता विषयों के अंतगत कई समानांतर शत्रुओं का आयोजन किया गया.

मंतव्य –

१. विश्वव्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपने संपक भाषा के रूप म स्थापित करेगा

२. मॉरीशस म विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर सरकारी समिति बनाई जाए

3 सभी देशों विशेषकर जिन देशों म अप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या म है, उनको सरकार ने अपने अपने देशों म हिंदी के अध्ययन अध्यापन को व्यवस्था कर उन देशों को सरकारों से आग्रह किया जाए कि वह हिंदी को संयुक्त राष्ट्र को भाषा बनाने के लिए राजनीतिक योगदान और समथन द.

(६) छठा विश्व हिंदी सम्मेलन- (14 से 18 सितंबर 1999 लंदन)

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन का कद्रीय विषय 'हिंदी और भावी पीढ़ी' जिसका आयोजन जिसका आयोजन 14 से 18 सितंबर लंदन ब्रिटेन म किया गया. छठा विश्व हिंदी सम्मेलन के अध्यक्ष डॉक्टर कृष्ण कुमार थी और भारत का नेतृत्व श्रीमती वसुधरा राजे ने किया था. छठे विश्व हिंदी सम्मेलन म लगभग २१ देशों के 700 प्रतिनिधि शामिल हए इस सम्मेलन म हिंदी भाषा एवं साहित्य दोनों पर ही बल दिया गया था.

१. विश्व भर म हिंदी के अध्ययन अध्यापन शोध प्रचार- प्रसार और हिंदी सृजन म समन्वय के लिए महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय कद्र ने सक्रिय भूमिका निभाई.

२. विदेशों म हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रमों के निधारण पाठ्य पुस्तकों के निमाण अध्यापकों के प्रशिक्षण आदि को व्यवस्था भी विश्वविद्यालय कर और सुदूर शिक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाएं.

३. मसों सरकार अन्य हिंदी प्रेमी सरकारों से परामश कर शीघ्र विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित कर.

४. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र म मान्यता दी जाए.

५. हिंदी को सूचना तकनीक के विकास, मानकोकरण, विज्ञान एवं तकनीको लेखन, प्रसारण एवं को अद्यतन तकनीक के विकास के लिए भारत सरकार एक कद्रीय एजंसी स्थापित कर.

६. नई पीढ़ी म हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल को जाए.

७. भारत सरकार विदेश स्थित अपने दूतावासों को निदेश द कि वह भारतवंशीयों को सहायता से विद्यालयों म एक भाषा के रूप म हिंदी शिक्षण को व्यवस्था करवाएं.

(७) सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन- 5 से 9 जून 2003 परामारीबो सुरीनाम पारा मारीबो

सातव विश्व हिदी सम्मेलन का विषय था- "विश्व हिंदी: नई शताब्दी को चुनौतियां" विषय पर सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन सुरीनाम को राजधानी परामरीबो हिंदी परिषद ग्लोबल ऑगनाइजेशन फॉर पीपल ऑफ इंडियन ओरिजन गोपियों सुरीनाम विश्वविद्यालय माता गौरी फाउंडेशन सनातन धम महासभा आय दिवाकर तथा सुरीनाम को अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं और संबंधित संगठनों द्वारा 5 से 9 जून 2003 को संपन्न हआ 5 जून सम्मेलन इसलिए रखा गया. सुरीनाम को धरती पर भारतवासियों का आगमन कई दशक पहले 5 जून को ही हआ था. इस सम्मेलन के संयोजक थे श्री जानको प्रसाद सिंह और भारत के प्रतिनिधित्व करने वाले श्री दिग्विजय सिंह थे.

१. संयुक्त राष्ट्र म हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाया जाए.

२. विदेशी विश्वविद्यालयों म हिंदी पीठ को स्थापना हो.

३. भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रभावी उपाय किए जाएं.

४. हिंदी के प्रचार हेतु वेबसाइट को स्थापना और सूचना प्रौद्योगिको का प्रयोग हो.

५.हिंदी विद्वानों को विश्व निदशिका का प्रकाशन हो.

६. विश्व हिदी दिवस का आयोजन हो.

७. कैरेबियन हिंदी परिषद को स्थापना हो.

८.दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों म हिंदी को हिंदी विभाग को हिंदी विभाग को स्थापना हो.

९. हिंदी पाठ्यक्रम म विदेशी हिंदी लेखकों को रचनाओं को शामिल किया जाए.

१०. सुरीनाम म हिंदी शिक्षण को व्यवस्था को जाए.

इस सम्मेलन म 26 हिंदी के विद्वानों को सम्मानित किया गया था जिस म 10 भारतीय थे और 16 विदेशी विद्वान थी.

(८)आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन- (13 से 15 जुलाई 2007 न्यूयॉक)

आठवां विश्व हिदी सम्मेलन 13 से 15 जुलाई 2007 को संयुक्त राज्य अमेरिका को राजधानी न्यूयॉक म इस सम्मेलन का आयोजन भारतीय विद्या भवन न्यू ईयर के सहयोग से भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने किया था. संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय के अध्यक्ष भारत के तत्कालीन विदेश राज्य मंत्री श्री आनंद शमा ने किया आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन का प्रमुख विषय था - "विश्व मंच पर हिंदी"

आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन के प्रमुख मंतव्य थे-

१. विदेशों में हिंदी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दूसरी भाषा के रूप म हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए तथा हिंदी के शिक्षकों को मान्यता प्रदान करने को व्यवस्था को जाए.

२. विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज को सरकारी करने एवं उद्देश्य पर बनाने के लिए सचिवालय को भारत तथा मॉरीशस सरकार सभी प्रकार को प्रशासनिक एवं आथिक सहायता प्रदान कर और दिल्ली सहित 4-5 अन्य देशों म इस सचिवालय के क्षेत्रीय कार्यालय खोलने पर विचार किया जाए. सम्मेलन सचिवालय से यह आह्वान करता है कि हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइट बनाई जाए.

३. हिंदी म ज्ञान- विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों पर सरल एवं उपयोगी हिंदी पुस्तकों को सृजन को प्रोत्साहित किया जाए. हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के प्रभावी उपाय किए जाएं. एक सवमान्य व सवत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सव सुलभ बनाया जाए.

४. विदेशों म जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों म हिंदी का अध्ययन- अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए और हिंदी अध्यापकों को एक सूची भी तैयार को जाए.

५. यह सम्मेलन विश्व के सभी हिंदी प्रेमियों और विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों तथा विदेशों म कायरत भारतीय राष्ट्रीय से भी अनुरोध करता है कि वह विदेशों म हिंदी भाषा साहित्य के प्रचार- प्रसार म योगदान कर.

६. वधा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय म विदेशी हिंदी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शुद्ध वृद्धि को शोध शोध वृती को व्यवस्था को जाए.

७. केंद्रीय हिंदी संस्थान भी विदेशों म हिंदी के प्रचार- प्रसार व पाठ्यक्रमों के निमाण म अपना सक्रिय सहयोग द.

८ . विदेशी विश्वविद्यालयों म हिंदी पीठ को स्थापना पर विचार- विमश किया जाए.

९. हिंदी को साहित्य के साथ साथ आधुनिक ज्ञान- विज्ञान और वाणिज्य को भाषा बनाया जाए.

१०. भारत द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर ऊपर आयोजित आयोजित को जाने वाली संगोष्ठी ओं तथा सम्मेलनों म हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए.(सौजन्य-विश्व हिंदी पत्रिका 2010 पृष्ठ नबर 158 से १६० विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस प्रधान संपादक डॉ राजद्र प्रसाद मिश्र संपादक गंगाधर सिंह सुखलाल वर्ल्ड हिदी सेन्ट्रे ट्रीज विश्व हिंदी सचिवालय स्विपट लन फॉरेस्ट साइड मॉरीशस)

(९) नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन- (22 से 24 सितंबर 2012 दक्षिण अफ्रीका)

नौवां विश्व हिंदी सम्मेलन का संकल्प पत्र म महात्मा गांधी को भाषा दृष्टि अंतनिहित रही. इस सम्मेलन का प्रमुख विषय रहा- " भाषा को अस्मिता हिंदी का वैश्विक संदभ" इस सम्मेलन को अध्यक्षता विदेश राज्यमंत्री श्रीमती प्रणीत कौर ने किया. मुख्य अतिथि दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री श्री प्रवीण गोरधन थे

१.हिंदी के बढ़ते हए वैश्वीकरण के मूल म गांधी जी को भाषा दृष्टि का महत्वपूण स्थान है.

२. मॉरीशस म विश्व हिंदी सचिवालय को स्थापना को संकल्पना प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान को गई थी. यह सम्मेलन इस सचिवालय को स्थापना के लिए भारत और मॉरीशस को सरकारों द्वारा किए गए अथक प्रयासों एवं समथन को सराहना करता है.

३. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय भी विश्व हिंदी सम्मेलनों म पारित संकल्पनाओं का ही परिणाम है. यह विश्वविद्यालय हिंदी के प्रचार- प्रसार और उपयुक्त आधुनिक शिक्षण उपकरण विकसित करने म सराहनीय काय कर रहा है.

४. सम्मेलन कद्रीय हिंदी संस्थान को भी सराहना करता है कि वह उपयुक्त पाठ्यक्रम और कक्षाओं का संचालन करके विदेशियों और देश के गैर हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों के बीच हिंदी का प्रचार- प्रसार कर रहा है.(https:// hi Wikipedia. org/ Wiki/ विश्व हिंदी सम्मेलन# नोवा_ विश्व_ हिंदी_ सम्मेलन)

दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन 10 से 12 सितंबर 2015 भोपाल भारत

दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन मध्य प्रदेश को राजधानी भोपाल म 10 से 12 सितंबर 2015 तक आयोजित किया गया इस सम्मेलन का मुख्य विषय था हिंदी जगत: विस्तार एवं संभावनाएं.

मंतव्य-

१.इस सम्मेलन म संयुक्त राष्ट्र संघ म हिंदी को समयबद्ध तरीके से आधिकारिक भाषा बनाने के लिए संकल्प के लिए जाने पर बल दिया गया.

२. विभिन्न देशों का समथन जुटाने के लिए भारतीय दूतावासों मिश्रण ओं को अधिक प्रयास करने चाहिए.

३. भारत म विदेशी भाषाओं को हिंदी माध्यम से सिखाने के लिए एक नया विश्वविद्यालय स्थापित करने को अनुशंसा को गई.

४. विदेश मंत्रालय को वेबसाइट पर मौलिक हिंदी लेखन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए साथ ही वेबसाइट पर क्षेत्रीय भाषाओं म भी जानकारी उपलब्ध करवाई जानी चाहिए.

५. कंप्यूटर को भाषा हिंदी होनी चाहिए.

६. भारत सरकार ने जो सर सच इंजन हिंदी म बनाया है वह आम जनता तक पहंचाया जाए तथा बीमा, चिकित्सा, बक आदि क्षेत्रों म हिंदी कंप्यूटर प्रणाली को बाधाएं जल्द से जल्द दूर को जाए.

७. सभी वैज्ञानिक चिकित्सा एवं अभियांत्रिको प्रयोगशालाओं एवं संस्थानों म विज्ञान संचार इकाई को स्थापना पर बल दिया जाए.

८. डिजिटल इंडिया के तहत प्राचीन भारत के वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित दुलभ ग्रंथ ग्रंथों जैसे को 'भारत को संपदा' आदि साहित्य को निशुल्क वेबसाइट पर उपलब्ध कराया.

प्रशासन म हिंदी विषय क्षेत्र म प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा और कायालय कामकाज म हिंदी को और अधिक सुगम बनाने के लिए विद्वानों ने अनेक महत्वपूण सुझाव दिए जिसम उच्च न्यायालयों और अन्य न्यायालयों म हिंदी के प्रयोग को सुनिश्चित का दलित साहित्य को प्रोत्साहन अटल बिहारी वाजपेई हिंदी विश्वविद्यालय म अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोध कद्र भारतीय रिजव बंक को राजभाषा नीति निजी क्षेत्र म तथा बकों म लागू करने पर बल देना. 10 विश्व हिंदी सम्मेलन म विद्वानों ने यह भी स्वीकार किया कि गिरमिटिया देशों म

प्रभावी हिंदी शिक्षा के प्रचार के लिए कुशल प्रशिक्षित शिक्षकों को उपलब्ध उपलब्ध कराना उपयोगी होगा. विदेशियों के लिए भारत में हिंदी अध्ययन की सुविधा बेहतर बनाने के लिए यह प्रस्ताव पारित हुआ. अन्य भाषा भाषी राज्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सम्मेलन में स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा हिंदी भाषा के विकास के लिए पत्रिकाओं आदि के प्रकाशन करने के लिए बल दिया गया. बाल साहित्य में हिंदी विषय पर भी काफी चचाएं हुई मौलिक हिंदी में लिखित बाल साहित्य के पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न की जाना चाहिए. इस प्रकार दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन भी हिंदी भाषा के साथ उसके विकास के साथ नई उपलब्धियों को नई उड़ानओं को देखते हुए एक सफल सम्मेलन के रूप में उसका समापन भी हुआ.

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन (मॉरीशस 18 अगस्त से 20 अगस्त 2018 तक)

18 अगस्त से 20 अगस्त तक 2018 तक मॉरीशस पाई में 11वां विश्व हिंदी सम्मेलन का एक भव्य आयोजन हुआ. दसवां और 11 वां दोनों ही विश्व हिंदी सम्मेलन की में स्वयं भी साक्षी रही. यह सम्मेलन अन्य सम्मेलनों से काफी अलग रहा. मॉरीशस जैसी सुंदर स्थानों पर लोगों का एक आकषण भी था तो दूसरी और हिंदी का साथ भी था. सम्मेलन का मुख्य विषय था " हिंदी विश्व और भारतीय संस्कृति" स्वामी विवेकानंद अंतराष्ट्रीय सेवा कद्र मॉरीशस पाई. विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी का महाकुंभ है इसका संकल्प और संकल्पना ऐतिहासिक और महत्वपूणं है भारत सरकार हिंदी को विश्व भाषा मंच पर प्रतिष्ठित करने की अपने संकल्प और प्रतिबद्धता के साथ अग्रसर है जिसका मूत रूप मॉरीशस में 11वीं सम्मेलन की परिणति के रूप में हमारे समक्ष रहा .

मेरा भी आलेख

मुख्य विषय: हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति

- समानांतर सत्र एवं उनके विषय
- समानांतर सत्र 1: भाषा और लोक संस्कृति के अंत:संबंध
- समानांतर सत्र 2: प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास
- समानांतर सत्र 3 : हिन्दी शिक्षण में भारतीय संस्कृति
- समानांतर सत्र 4 : हिन्दी साहित्य मसंस्कृति चितन
- समानांतर सत्र 5 : फिल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण
- समानांतर सत्र 6 : संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति
- समानांतर सत्र 7 : प्रवासी संसार: भाषा और संस्कृति
- समानांतर सत्र 8 : हिन्दी बाल साहित्य और भारतीय संस्कृति

द्वितीय विश्व हिंदी संमेलन 28 से 30 अगस्त 1976 तथा 1993 में चतुथ विश्व हिंदी संमेलन मॉरीशस में आयोजन किया गया था हिंदी भाषा हेतु किये प्रयत्नों का यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज है

भारतीय उच्चायोग-

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात सन1948 में मॉरीशस में दूतावास की स्थापना हुई। लेकिन हिंदी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी के मोह के कारण वहां भी एक संघष की पारिस्थिति का सामना करना पडा था। वस्तुत: "आशा तो यह की जाती थी कि आजाद भारत के दूतावास अपना काम काज अपने देश की भाषा हिंदी में चलायगे, किंतु हुआ इसके विपरित हमारे दूतावास अपना अधिकांश काम-काज अंग्रेजी में ही करने लगे। भारत सरकार और भारतीय दूतावासों के प्रतिकूल खैये से केवल प्रवासी भारतीयों के हिंदी प्रेम प्रसादी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा,

बल्कि वे विदेशी और उनकी सरकारे भी धीरे-धीरे हिंदी के पठन पाठन से विमुख होने लगी, जिसकी भारत से मित्रता बढ़ाने म रुची थी और वो ऐसा मानते थे कि भारत के साथ संबंध बढ़ाने के लिए उनकी भाषा हिन्दी को सीखना आवश्यक है।" (23)

मॉरीशस म कि हिंदी भाषा पर क्रियोली अंग्रेजी और फ्रेंच का दबदबा बना हआ है जहां अंग्रेजी और फ्रेंच की स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं है वहां भारतीय भाषाएं और हिंदी भी अच्छे-बूरे प्रभाव से घिरी हई है- भाषा और संस्कृति का अभिन्न संबंध है लेकिन साम्राज्यवाद की तांकत उसे अपने तरीके से उसकी बाधाएं बन कर आती है।

हिंदी साहित्यकारों ने भाषा संबंधी अपने विचारों को काव्यात्मक रूप दिया है-

अभिमन्यु अनत-

मेरे दोस्त/उस भाषा म मेरे लिए

शुभ का कामना मत कर/ जिसकी चुभती ध्वनी मुझे

उन गुलामी के दिनों को याद दे जाती है

चाबुक के बौछारो का आदेश/ निकलता था जिस भाषा म

उस भाषा को मेरी भाषा मत कह/ मेरे दोस्त

(प्रथम विश्व हिंदी संमेलन स्मारिका पृ. 128)

श्री ब्रजद्र भगत मधुकर-

"अंग्रेजी और फ्रांसे बोलो अंग्रेजों-फ्रेंचों से भाई बात 'किरियोलों से कर लो उनकी भाषाओं म भाई नहीं लगाओ दिल से अपने 'किरियोली' को मेरे भाई नहीं चढाओं जान बूझकर, प्यारी हिंदी मां को सूली"

(घर-घर म चलती किरियोली पृ. 23 जय हिन्दी)

- श्री हेमराज सुंदर-

"म तुम्ह बताना चाहता हं कि-

हिंदी अब प्राय: निलज्ज रहने लगी है

मुट्ठी भर लोगों के इशारों पर

वहाँ नहीं, हर कहीं

यहां पर भी नाच रही थी।"

(तृतीय विश्व हिन्दी संमेलन 'चुनौती' कविता से)

श्री मुकेश. जी बोध -

हिंदी वोट, नोट आश्वासान, या प्रणाम करने के लिए ही नहीं है, हिंदी के लिए अपना दु:ख व्यक्त करते हए कहते है-

"हाय अपना सवस्व खोकर

स्कूलों म / कोलेजों म / प्रसारण कद्र म/ पत्रों म हिंदी सिसक रही है/ कराह रही है

आखिर कब तक / कटहा लोगों को हवेलियों म हिंदी का झंडा कींचा रहेगा/ पायदान बना रहेगा

आखिर कब तक/ आखिर कब तक

(मॉरीशस के नौ विश्व कवि- (हिंदी) पृ. 152-153)

श्री महेश राम जियावन -

परसों/हिंदी/ मेरी संस्कृति को भाषा थी बपौती थी/ मातृभाषा थी

कल/ यह 'नौकरी' को भाषा हो गयी/आज/ यह वोट को भाषा हो गयी

(मॉरीशस को हिंदी कविता पृ. 5)

मॉरीशस म हिंदी भाषा को फ्रेंच तथा अंग्रेजी से प्राथमिक विधालय, माध्यमिक स्तर पर शिक्षा क्षेत्रांतगत संघष करना पड़ रहा है, तो भोजपुरी हिंदी को क्रियोली से संघष करना पड रहा है। भाषाई स्थिति को अगर बात कर तो मॉरीशस म काफो जटिल परिस्थिति है क्योंकि "इस देश को मिट्टी को भाषा न तो अंग्रेजी है और न तो फ्रेंच, ऐतिहासिक संघष आथिक व्यवस्था और स्वतंत्रता- अभियान को ध्यान म रखते हए इन भाषाओं कि आंकेम तो कहीं -न- कही हिंदी तथा उसको साथी भाषाएं यहां के ईस के खेतों और मिट्टी से जुड़ी लगती ह। जबकि फ्रेंच शुरु से ही शोषकों को भाषा रही ह।" (24) हिंदी अपनी अस्मिता के लिए संघष कर रही है। गरीबों को भाषा है, मजदूरों को भाषा है लेकिन उच्च स्तर के लोगों के बीच ही उसको उपेक्षा हो रही है। गांव ने अपनाया है शहर ने उसे बहिष्कृत किया है। नई पीढ़ी जितना जल्दी भाषा के महत्व को समझ ले उतना अच्छा है, जितना साहित्यिक जगत म विकास कर रही है. वही भाषाई नव उपनिवेशवाद के चलते अपने अस्मिता व अस्तित्व के लिए एक नया संघष करती हई दृष्टिगत होती है.

निष्कष

संस्कृति का मूल आधार भाषा है और भाषा का चरमोत्कष साहित्य म ही प्रकट होता है. भाषा और साहित्य का उत्थान समाज, संस्कृति और जीवन का उत्थान है. संस्कृति एक जगह ठहरती नहीं है उसकी गतिशीलता और प्रवाह म ही समाज का कल्याण रहता है. हम जिस भाषा का प्रयोग करते ह, वह भाषा भी संस्कृति की भांति ही जीवन को आगे बढ़ानेवाली होती है. सत्यम, शिवम और सुंदरम के सूत्र के आधार पर साहित्य सत्य को प्रकट करते हए शिवम की भावना से सुंदर रूप से समाज म प्रस्तुत होता है. संस्कृति एक दूरगामी दृष्टि भी रखती है.

भाषा को संस्कृति का संवाहक कहा गया है. सभ्यता म संस्कृति का विकास होता है और उसे दशन, साहित्य, नाटक, कला, विज्ञान और गणित विकसित होते ह, जो सास्कृतिक बौद्धिक उन्नति का पयायवाची है और सभ्यता भौतिक विकास का समानार्थी सभ्यता बाह्य क्रियात्मक रूप से है. संस्कृति विचारधारा का परिणाम हिंदी विश्व और भारतीय समाज एवं संस्कृति समाज के प्रत्येक अवस्था म भाषा उसकी संस्कृति को प्रतिबिंबित करती है. कोई भी भाषा किसी भी भाषा से कम नहीं होती है. भाषा की रक्षा समाज एवं संस्कृति की रक्षा करना है.

वैश्वीकरण की अवधारणा के साथ देखा जाए तो बाजारवादी नीतियों के कारण हमारी भाषा, हमारा साहित्य, हमारी संस्कृति सवाधिक प्रभावित हो रही है. आज विश्व म डेढ़ सौ करोड़ लोगों द्वारा अंग्रेजी, करीब 100 करोड़ लोग चीनी और इसके बाद तीसरा स्थान हिंदी का बोलने वालों की संख्या के आधार पर है. विश्व के परिपेक्ष्य म हिंदी के बढ़ते प्रभाव को देखा जाए तो भारत के अलावा मॉरीशस, फीजी, बहरीन, संयुक्त अरब अमीरात, कनाडा, अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, सुरीनाम, कुवैत, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, चीन, ऑस्ट्रेलिया तथा अनेक यूरोपीय देशों म बसे हए लाखों लोगों के द्वारा प्रयोग किया जाता है.

मॉरीशस का हिंदी लेखन भारतीय हिंदी लेखन से कट नहीं सकता क्योंकि वह भारतीय हिंदी को जड़ों से फैला हआ है. मॉरीशस को 'लघु भारत' भी कहा गया है. उसके प्रारंभिक साहित्य म देखा जा सकता है. लोकगीत धामिक प्रसंग भारतीय रामायण गीता आदि अनेक प्रसिद्ध ग्रंथों का साहित्य के साथ जुड़ाव देखा जा सकता है. मॉरीशस मं आधी से ज्यादा आबादी भारतीय मूल को है, इसीलिए भारतीय संस्कृति तथा भाषाओं से जुड़ी रहती है. भारतीय हिंदी साहित्य के प्रभाव के कारण दिशाओं और परिणामों पर तो स्वतंत्र रूप से काय किया जा सकता है. भारतीय हिंदी साहित्य के मॉरीशस हिंदी साहित्य पर प्रभाव के कई कारण हं. मॉरीशस का हिंदी साहित्य बीसवीं सदी के हिंदी साहित्य से ही प्रभावित है, उससे पहले का हिंदी साहित्य विषय रूप म भी प्रभावित नहीं कर सका है. खड़ी बोली है और आधुनिक काल की रचनाएं ह. भारतीय हिंदी मॉरीशस हिंदी का मूल है. अतः संगठन शैली पर उसका प्रभाव अनिवाय तत्व माना गया है. बीसवीं सदी के प्रारंभिक कवि और लेखकों म भी प्रेमचंद और मैथिलीशरण गुप्त को अधिक प्रभाव रहे ह, जबकि नए लेखकों म कमलेश्वर, मोहन राकेश, मुक्तिबोध, दुष्यंत कुमार आदि का प्रभाव विशेष रहा है.

मॉरीशस म अफ्रीका एशिया और यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों से भी लोग आते रहे ह. फलस्वरूप मॉरीशस म आज जो भाषाए बोली जाती है, उसम भी मिलाजुला स्वरूप दिख जाता है. देखा गया है जैसे कि प्रमुख भाषाओं म सबसे पहले फ्रेंच, अंग्रेजी, क्रियोली हिंदी क्रियोली भोजपुरी, उदू, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती, चीनी, संस्कृत इन सभी भाषाओं म भी क्रियोली एक बोली के रूप म जो एक दृष्टि से फ्रेंच का ही अपभ्रंश है पूरे मॉरीशस म सभी समुदाय के बीच बोली और समझी जाती है. क्रियोली फ्रेंच मालिक को और अफ्रीका नीग्रो दास बना कर लाए थे उनके पारस्परिक बोलने वाली भाषा के रूप में विकसित हई थी. क्रियोली म भोजपुरी और अन्य भाषाओं के शब्द भी समाहित है. अंग्रेजी का प्रचलन ब्रिटिश शासकों के सन 1810 म मॉरीशस पर अधिकार के कारण हआ था. संसार के अनेक भाषाओं का जन्म इसी प्रकार विश्व भाषा के रूप म हआ. उस म नए-नए शब्दों का निमाण अन्य भाषाओं के शब्दों का आत्मसात करते हए. स्वतंत्र और समृद्ध भाषा का रूप ग्रहण कर सके हं. मॉरीशस को भाषाओं और बोलियों का सवाल प्रजाति गत संबंध इस प्रकार ह_

> यूरोपीय भाषा वग- फ्रेंच और अंग्रेजी से संबंध रखती है.

> भारत भूमध्यसागरीय वग- मॉरीशस म हिंदी भोजपुरी गुजराती मराठी तमिल तेलुगू और संस्कृत वग को है.

>नीग्रो भाषा वर्ग- तेरी बोली पर इस भाषा वर का प्रभाव है.

>मंगोल भाषा वग- चीनी भाषा इस वग को है.

> मिश्र भाषा वग- मॉरीशस म उदू इस वग से संबंधित है जो मूलतः भारत और पाकिस्तान म प्रचलित है.

रामदेव धुरंधर की यह पंक्तियां जिसम मॉरीशस म हिंदी और भोजपुरी के अस्तित्व के प्रति अपने विचारों को व्यक्त करती हई देखी जा सकती है- "इस देश म हिंदी खत्म होने वाली नहीं है. कहा जाता था इस देश म भोजपुरी का अस्तित्व मिट जाने वाला है खतरा हम भी लगा था पर अब स्थिति मं सुधार आ रहा है. जहां देख भोजपुरी बोलते लोग मिल जाते ह. पर अब स्थिति म सुधार आ रहा है. हिंदी को भी जीवंतता का यही रहस्य है. इसे कितने भी अवरोध का सामना करना पड़े या कुंदन बन कर अपने पूरे निखार म होगी. आवश्यकता है कि इतनी इसके संरक्षण के लिए हम प्रतिज्ञाबद्ध होना चाहिए. हिंदी म लेखन जारी रहे और पठन- पाठन का क्षितिज और विस्तार पाए. यहां के युवकों और युवतियों म लिखने की लगन देखी जाती ह पर सही मागदशन के अभाव म यह भटके हए प्रतीत होते ह. मॉरीशस म तब लिखा जाता था, जब यहां मात्र कुछ लेखकों को पुस्तक पहंचती थीं. अब तो पुस्तकों का खजाना हमारे पास होता है. भारत से लेखक आते रहते ह. यहां के लेखकों को भी भारत जाने का

सहयोग प्राप्त रहता है. यह भी दो देशों को हिंदी को जोड़ने का एक साथक पहल है. म गव से कहंगा हम आशा का नाव पर बैठे हए ह. इस नाव को पार लगाना है." हिंदी के लिए सतक और जागरूक लेखकों ने अलख जगाये रखा है.हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा निरंतर हिंदी के कायक्रम होते रहते ह. राज हिरामन और रामदेव धुरंधर जैसे हिंदी प्रेमियों ने अलख जलाए रखा है. धनराज शम्भु, प्रहलाद रामशरण, यन्तु देव बुद्धू, राम टहलजी, महेश जियावन, सत्य देव टगर, आदि अनेक हिंदी सेवी और प्रेमियों ने हिंदी के लिए प्रचार –प्रसार का दीप प्रज्वलित किया हआ है.

-: संदभ सूची :-

1. मॉरीशस म हिंदी का विकास यात्रा: डॉ. के. हजारी सिंह: पृ. 1

2. भाषा और समाज: डॉ. रामविलास शमा: पृ. 407

3 http:www.hindisamy:com

4. आत्म विज्ञापन: श्री अभिमन्यु अनत: पृ. 66

5. मॉरीशस म हिंदी-भाषा- उद्भव और विकास: डॉ. श्यामधर तिवारी: पृ. 11

6. मॉरीशस म हिंदी और उसका साहित्य- शोध प्रबंध: डॉ. मोहनलाल हरदयाल: पृ. 212

7. मॉरीशस देश और निवासी : श्री जितद्र मितल: पृ. 109

8. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास: डॉ. गुणान जुयात: पृ. 30-32

9. मॉरीशस म भारतीय अप्रवासी: डॉ. धमद्र प्रसाद: पृ. 46

10. मॉरीशस म भारतीयां का इतिहास: डॉ. के. हजारीसिंह : पृ. 65-66

11. मॉरीशस म भारतीयां का इतिहास : डॉ. के. हजारी सिंह: पृ.66

15. The Establishment- and cultivation of Modern Standrad Hindi in Mauritius By. Dr. L.P. Ramyead- page. 38

16. सुचीता रामदीन- संस्कार मंजरी- पृ.11

17. मॉरीशस म हिंदी भाषा: उद्भव और विकास: डॉ. श्यामधर तिवारी: पृ.19

18. एक मॉरीशस वासी को हिंदी यात्रा पृ-4

19 मॉरीशस म हिंदी को विकास-यात्रा: डॉ. श्यामधर तिवारी: पृ. 18-19

20 मॉरीशस म हिंदी और उसका साहित्य: अप्रका.शो.प्र.) [illegible]: [illegible]. [illegible] : [illegible]176

21 मॉरीशस म हिंदी साहित्य का इतिहास : [illegible]. श[illegible] : [illegible]34

22 [illegible]-[illegible] क्षिप्त [illegible]: श्री [illegible]: 1970

23 प्र[illegible]: प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन स्मारिका: श्री ललन प्रसाद व्यास का लेख: [illegible]132

24 [illegible] : श्री [illegible] : [illegible]60